



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

### लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	17.06.2020	02	05-06

## इधर, एचएयू में भाषा कौशल पर तीन सप्ताह के ऑनलाइन रिफ्रेशर कोर्स का हुआ समापन

हिसार | चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के भाषा और हरियाणवी संस्कृति विभाग के सहयोग से मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय ने 27 मई से 16 जून 2020 तक भाषा कौशल पर एक ऑनलाइन रिफ्रेशर पाठ्यक्रम का आयोजन किया।

भाषा कौशल पर कुलपति प्रो. केपी सिंह ने ऑनलाइन माध्यम से ऐसे प्रासंगिक पाठ्यक्रमों के संचालन में मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय के प्रयासों की सराहना की। कोरोना के चलते ऑनलाइन माध्यम से ऐसे पाठ्यक्रमों को आयोजित करना समय की आवश्यकता है और आगे भी इस प्रकार के पाठ्यक्रमों के संचालन के लिए निदेशालय को प्रोत्साहित किया। कुलपति ने बताया कि वैज्ञानिक उन्नति व उत्थान के लिए अंग्रेजी भाषा का

महत्व दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। डॉ. एमएस सिंहपुरिया, निदेशक, मानव संसाधन प्रबंधन ने भाषा कौशल के बारे में वैज्ञानिकों के ज्ञान को बढ़ाने की आवश्यकता पर भी जोर दिया। संयुक्त निदेशक और पाठ्यक्रम समन्वयक मंजू महता ने बताया कि इस पाठ्यक्रम में सभी प्रतिभागियों ने बहुत उत्साह व उमंग के साथ अपनी प्रतिभागिता निभाई। विभिन्न संकायों के कुल 44 वैज्ञानिकों और शिक्षकों ने पाठ्यक्रम के लिए अपना पंजीकरण कराया जिनमें से पांच प्रतिभागी राजस्थान और गुजरात राज्यों से हैं जबकि सात प्रतिभागी विश्वविद्यालय के विभिन्न कृषि विज्ञान केन्द्रों से हैं। पाठ्यक्रम के दौरान प्रतिभागियों को भाषा में कुशलता, उच्चारण में सुधार और अंग्रेजी भाषा में अभिव्यक्ति विषयों पर जानकारी दी।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

### लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	17.06.2020	03	02-08

## ग्राफिटंग से मिला निमेटोड की समस्या का समाधान, अब खारेपन वाली मिट्टी पर शोध शुरू

जग्मण संवाददाता, हिसार: ग्राफिटंग रहा तो एचएयू किसानों को पौधे तैयार तकनीकि के माध्यम से किसान खारे करके दे सकेगा।

पानी वाली जमीन में भी सब्जियां जंगली जड़ों पर अधिक उपज उगा सकेंगे। इसके लिए एचएयू के वाली सब्जियों का किया प्रयोग : कृषि विज्ञानियों ने रिसर्च शुरू भी कर अक्सर सामान्य तरीके से सब्जी देते हैं। यह प्रयोग सफल रहा तो प्रदेश उत्पादन में कई बीमारियां फैल समें ऐसे इलाजे जहाँ मिट्टी में खारेपन को नुकसान पहुंचाती हैं। अत्यधिक की समस्या के कारण कोई सब्जियां रसायन के छिड़काव के बाद भी उग नहीं पातीं, वहाँ भी अधिक उपज इन समस्याओं का समाधान नहीं वाली सब्जियां उगाई जा सकतीं। हो पाता। ऐसे में एचएयू के सहारी दरअसल चौधरी चरण सिंह विज्ञान विभाग के विज्ञानियों ने हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ग्राफिटंग तकनीकि को अपनी रिसर्च (एचएयू)में छिले दो वर्षों से का अहम दिस्सा बनाया है। इसमें ग्राफिटंग तकनीकि पर रिसर्च चल कई बीमारियों पर वैज्ञानिकों को रही है। इसमें काफी हद तक सफलता सकारात्मक परिणाम भी मिल चुके भी मिल चुकी है। पहले विज्ञानियों ने हैं। इस तकनीकि में जंगली जड़ों ग्राफिटंग तकनीकि से बैन, टमाटर, (स्टर्टर्टेक्स) को विकासित कर मिर्च को उगाकर उसमें मिट्टी की रक्कड़ उके तने पर अधिक उपज वाली बीमारियों और मिट्टी में निमेटोड की सब्जियां लाई जा सकती हैं। इस जैसी बड़ी समस्या पर शोध के बाद तकनीकि पर शोध के साथ दूसरा सकारात्मक परिणाम पाए। सब ठीक लगातार जारी है।



कृषि रसायनों को कम करने के लिए यह बड़ा कदम सज्जी विज्ञान विभाग में 2018 में 175 लाख की रशि की एक राष्ट्रीय कृषि विकास योजना-एफार परियोजना का मजुरी दी गई थी। जिसके तहत इस प्रोजेक्ट पर अनुसंधान कार्य किया जा रहा है। एचएयू के कुलपति प्रौ. केंपी सिंह ने बताया कि हरियाणा में एक बार पहचाने जाने वाले प्रतिरोधी रूटर्टेक्स न केरोगे बिलकुल इस तकनीक के साथ हमारे किसानों की प्राप्त समस्याओं के समाधान की पैशकश करेंगे जिन्हे वर्तमान परिदृश्य में स्थायी सज्जी उत्पादन के लिए रसायनों के सीमित उपयोग के साथ पर्यावरण के अनुकूल रहेंगे। इस कार्य में पौधे की शक्ति और उपज में गृहितों के लिए भी प्रयोग किये जा रहे हैं।

एक ही पौधे पर उगाए खीरा व ककड़ी, कटू पर उगा सकते हैं तरबूज सज्जी विज्ञान विभाग से ग्राफिटंग प्राप्ती में अनुसंधान कार्य देख ने अपने कार्यों पर सुरा और ककड़ी में कई स्थानों पर जमीन खारे पानी से रही परियोजना अधिकारी डा. इन्द्र ग्राफिटंग तकनीक से एक ही पौधे पर ग्रसित है जहाँ सब्जियां नहीं होती हैं। अरोड़ा बताती है कि विवि ने दो प्रकार इसी तकनीक से इस मिट्टी में आसानी से ग्राफिटंग तकनीक में अनुसंधान तकनीक में हम जाती सब्जियां से हो फसलें हो सकतीं। ग्राफिटंग किया। इसे इलाज सफल रहा। इस की जड़ों को उगाकर उसके तने पर का उपयोग पर्यावरणीय तापान जैसे निर्वंजीसी सब्जियां, दूसरे समैंट ग्राफिटंग तकनीक से दूसरी सब्जियां को लगता, सुखा, बाढ़ और तापमान को में बैल वाली सब्जियां जिसमें कटू लगते हैं। इससे हमने मिट्टी की कई कम करने के लिए भी किया जाता है।



### ग्राफिटंग तकनीकि इन समस्याओं को करारी दूर

- रोगप्रतिरोध क्षमता विकासित करना
- सहजनीलता, नेमोटोड प्रतिरोध बनाना
- उपज में गृहित लाना
- कम तापमान व उच्च तापमान के प्रति सहिष्णुता
- उच्च नमक सहिष्णुता, बाढ़ सहिष्णुता, उन्नत पोषक तत्व का बढ़ना



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

### लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि भूमि	17.06.2020	02	05-07

**हकूमि के सब्जी विज्ञान विभाग ने किसानों को दी खुशखबरी**

## कीट व मृदाजनित बीमारियों को कम करने को ग्रापिटंग तकनीक ईजाद की

- सब्जियों में ग्रापिटंग महत्वपूर्ण हो गई है वर्षोंकि फसल चक्र या मिट्टी के धूमन के विकल्प सीमित

हरिभूमि न्यूज || हिसार

हकूमि के सब्जी विज्ञान विभाग द्वारा कीट व मृदाजनित बीमारियों को कम करने के लिए ग्रापिटंग तकनीक विकसित की गई है। ग्रापिटंग एक अनूठी बागवानी तकनीक है। जिसका उपयोग दुनियाभर में मिट्टी से पैदा होने वाली बीमारियों और कीटों को दूर करने के लिए पौधे की शक्ति बढ़ाने के लिए किया जाता है। हकूमि के सब्जी विज्ञान विभाग में 2018 में 175 लाख की राशि की एक राष्ट्रीय कृषि विकास योजना-रफ्तार परियोजना को मंजूरी दी गई है। परियोजना का संचालन डा. एस के सहरावत के नेतृत्व में अनुसंधान निदेशालय द्वारा किया जा रहा है। कुलपति प्रो. केपी सिंह ने बताया कि हरियाणा में एक बार पहचाने जाने वाले प्रतिरोधी रुटस्टॉक्स न केवल कृषि-रसायनों पर निर्भरता को कम करेंगे। आज सब्जियों में ग्रापिटंग अधिक महत्वपूर्ण हो गई है वर्षोंकि फसल चक्र या मिट्टी के धूमन के विकल्प सीमित हैं।



हिसार। ग्रापिटंग तकनीक से प्राप्त सब्जियों की जानकारी देते कुलपति प्रो. केपी सिंह। फोटो: हरिभूमि

### तापमान कम करने के लिए भी होता है उपयोग

ग्रापिटंग का उपयोग पर्यावरणीय तापाव जैसे लवणता, सूखा, बाढ़ और तापमान को कम करने के लिए भी किया जाता है। सब्जी विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. एके भाटिया एवं डॉ. विनोद बत्तरा पूर्व विभागाध्यक्ष ने बताया कि ग्रापिटंग प्रणाली में अनुसंधान का कार्य डॉ. छन्दु अरोड़ा, परियोजना अधिकारी द्वारा किया जा रहा है।

### ग्रापिटंग टमाटर व मिर्च की बढ़ रही संख्या

तरबूज फसल के संदर्भ में जापान, कोरिया, दक्षिणी एशेन, दक्षिणी इटली, तुर्की और ग्रीस में उत्पादित लगभग सभी तरबूजों को ग्राप दिया जाता है और दुनियाभर में ग्रापिटंग टमाटर, बैंगन, मिर्च, ककड़ी और खरबूजे की संख्या बढ़ रही है।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

### लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि भूमि	17.06.2020	11	07-08

# हकूमि में भाषा कौशल पर ऑनलाइन रिफ्रेशर कोर्स

- ऑनलाइन माध्यम से ऐसे पाठ्यक्रमों को आयोजित करना समय की आवश्यकता है

**हरिभूमि न्यूज ► हिसार**

हकूमि के भाषा और हरियाणवी संस्कृति विभाग के सहयोग से मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय ने 27 मई से 16 जून तक भाषा कौशल पर एक ऑनलाइन रिफ्रेशर पाठ्यक्रम का आयोजन किया। भाषा कौशल पर तीन सप्ताह के ऑनलाइन रिफ्रेशर कोर्स के वैलेडिक्ट्री फंक्शन पर कुलपति प्रो. केपी सिंह ने ऑनलाइन माध्यम से ऐसे प्रासंगिक पाठ्यक्रमों के संचालन में मानव संसाधन प्रबंधन

निदेशालय के प्रयासों की सराहना की। उन्होंने कहा कि कोरोना महामारी के चलते ऑनलाइन माध्यम से ऐसे पाठ्यक्रमों को आयोजित करना समय की आवश्यकता है और आगे भी इस प्रकार के पाठ्यक्रमों के संचालन के लिए निदेशालय को प्रोत्साहित किया।

कुलपति महोदय ने बताया कि वैज्ञानिक उन्नति व उत्थान के लिए अगेंरजी भाषा का महत्व बढ़ रहा है। डॉ. एमएस सिढ्धपुरिया, निदेशक, मानव संसाधन प्रबंधन ने भाषा कौशल के बारे में वैज्ञानिकों के ज्ञान को बढ़ाने की आवश्यकता पर भी जोर दिया। कृषि और संबंधित क्षेत्रों में भाषा कौशल का महत्व है।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	17.06.2020	01	02-03

### हकृवि ने मृदाजनित बीमारियों को कम करने के लिए विकसित की ग्राफिंटग तकनीक



ग्राफिंटग तकनीक से प्राप्त कुकुर्बिट्स सब्जियों के बारे में समझाते क्रूलपति प्रो. के.पी. सिंह।

हिसार, 16 जून (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सब्जी विज्ञान विभाग में 2018 में 175 लाख की राशि की राष्ट्रीय कृषि विकास योजना-रप्तार परियोजना को मंजूरी दी गई है, जिससे न केवल हरियाणा बल्कि देश में भी निकट भविष्य में ग्राफिंटग तकनीक के अनुसंधान कार्य और व्यवसायीकरण को बढ़ावा मिलेगा। इस परियोजना का संचालन डा. एस. के. सहरावत के नेतृत्व में अनुसंधान निदेशालय द्वारा किया जा रहा है।

#### सब्जियों में ग्राफिंटग अधिक महत्वपूर्ण

प्रो. के.पी. सिंह ने बताया कि हरियाणा में एक बार पहचाने जाने वाले प्रतिरोधी रूटस्टॉक्स न केवल कृषि-रसायनों पर निर्भरता को कम करेंगे बल्कि इस तकनीक के साथ

हमारे किसानों की प्रमुख समस्याओं के समाधान की पेशकश करेंगे, जिन्हें वर्तमान परिदृश्य में स्थायी सब्जी उत्पादन के लिए रसायनों के सीमित उपयोग के साथ पर्यावरण के अनुकूल माना जाता है। आज सब्जियों में ग्राफिंटग अधिक महत्वपूर्ण हो गई है क्योंकि फसल चक्र या मिट्टी के धूमन के विकल्प सीमित हैं।

ग्राफिंटग का उपयोग पर्यावरणीय तनाव जैसे लवणता, सख्ता, बाढ़ और तापमान को कम करने के लिए भी किया जाता है। तरबूज फसल के संदर्भ में जापान, कोरिया, दक्षिणी स्पैन, दक्षिणी इटली, तुर्की और ग्रीस में उत्पादित लगभग सभी तरबूजों को ग्राफ्ट किया जाता है और दुनियाभर में ग्राफिंटग टमाटर, बैंगन, मिर्च, ककड़ी और खरबूजे की संख्या बढ़ रही है। वैसे सब्जियों में ग्राफिंटग के फायदे कई फायदे हो सकते हैं।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	17.06.2020	02	04-05

# 1.75 करोड़ के ग्राफिटिंग प्रोजेक्ट के तहत किसानों को सिखाई जाएगी तकनीक

अमर उजाला ब्यूरो

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सब्जी विज्ञान विभाग द्वारा निमेटोड, कीट, मृदाजनित बीमारियों को कम करने के लिए विकसित ग्राफिटिंग तकनीक पर काम किया जा रहा है। एक लाख 75 करोड़ के इस प्रोजेक्ट के तहत अब किसानों को भी यह तकनीक सिखाई जाएगी। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. केपी सिंह ने कहा कि निकट भविष्य में ग्राफिटिंग तकनीक के अनुसंधान कार्य और व्यवसायीकरण को बढ़ावा मिलेगा।

रसायनों पर निर्भरता होगी कम : हरियाणा में एक बार में पहचाने जाने वाले प्रतिरोधी रूटस्टॉक्स न केवल कृषि-रसायनों पर निर्भरता

अन्य रोग प्रतिरोधक क्षमता वाले पौधों की जड़ों पर विकसित किए जाते हैं सब्जियों के पौधे

को कम करेंगे, बल्कि इस तकनीक के साथ हमारे किसानों की प्रमुख समस्याओं के समाधान भी होगा। उन्होंने बताया कि हरियाणा और आसपास के क्षेत्रों में रूटस्टॉक्स की पहचान के उद्देश्यों के साथ अनुसंधान कार्य शुरू किया गया है। इस संदर्भ में सब्जी विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. एके भाटिया एवं डॉ. विनोद बत्तरा पूर्व विभागाध्यक्ष ने बताया कि ग्राफिटिंग प्रणाली में अनुसंधान का कार्य डॉ. इंदु अरोड़ा, परियोजना अधिकारी द्वारा किया जा रहा है।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

### लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स	16.06.2020	--	--

## हृकृषि के सब्जी विज्ञान विभाग द्वारा निमेटोड, कीट, मृदाजनित बीमारियों को कम करने के लिए विकसित की ग्राफिटिंग तकनीक

सिटी पल्स न्यूज़, हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. के.पी. सिंह के मार्गदर्शन में सब्जी विज्ञान विभाग में 2018 में 175 लाख की गांश की एक राष्ट्रीय कृषि विकास योजना-रफ्तार परियोजना को मंजूरी दी गई है, जिससे न केवल हरियाणा बालिक देश में भी निकट भविष्य में ग्राफिटिंग तकनीक के अनुसंधान कार्य और अध्यात्मीकरण को बढ़ावा दिलेगा। इस परियोजना का संचालन डॉ. एस. के. सहरावत के नेतृत्व में अनुसंधान निदेशालय द्वारा किया जा रहा है। इसके अंतर्गत किया जा रहा शोध कार्य न केवल हरियाणा बालिक देश के सभी किसान भाईयों के लिए उपयोगी होगा जो सब्जी उत्पादन से जीविका कमा रहे हैं।

प्रो. के.पी. सिंह ने बताया कि



हिसार। ग्राफिटिंग तकनीक से प्राप्त कुकुर्बिंदस सब्जियों के बारे में समझाते हुए कुलपति प्रो. के.पी. सिंह।

हरियाणा में एक बार फहचाने जाने के बारे में बालिक इस तकनीक के साथ लर्नान परिदृश्य में स्थानी सब्जी आले प्रतिशेषी रूटस्टीक्स न केवल हमारे किसानों की प्रमुख समस्याओं को दूर करने के लिए रसायनों के सीमित कृषि-साधनों पर निर्भरता को कम के समाधान की पेशकश करेंगे जिन्हें उपयोग के साथ पर्यावरण के

अनुकूल माना जाता है। ग्राफिटिंग एक अनुग्रहीत विधि का उपयोग दुनिया भर में मिट्टी से पैदा होने वाली बीमारियों और कीटों को दूर करने के लिए या विभिन्न पर्यावरणीय तनाव परिस्थितियों में पौधों की शक्ति बढ़ाने के लिए किया जाता है।

सब्जी विज्ञान विभाग के विभागाधारा डॉ. ए.के. भाटिया एवं डॉ. विनोद बत्रा पूर्व विभागाधारा ने बताया कि ग्राफिटिंग प्रणाली में अनुसंधान का कार्य डॉ. इन्दु अरोड़ा, परियोजना अधिकारी द्वारा किया जा रहा है। इस तकनीक के प्रचलन के साथ ही किसानों की आय को भी बढ़ाया जा सकेगा व सब्जी उत्पादकों को इससे विशेषतः काफी लाभ होगा और इस दिशा में सब्जी विज्ञान विभाग में शोध कार्य निरंतर जारी रहेगा।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

### लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नित्य शक्ति	16.06.2020	--	--

# हकूमि ने बीमारियों को कम करने के लिए विकसित की ग्राफिटिंग तकनीक

नित्य शक्ति टाइम्स न्यूज़

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. के.पी. सिंह के मार्गदर्शन में सब्जी विज्ञान विभाग में 2018 में 175 लाख की राशि की एक राष्ट्रीय कृषि विकास योजना-रफतार परियोजना को मंजूरी दी गई है, जिससे न केवल हरियाणा बल्कि देश में भी निकट भविष्य में ग्राफिटिंग तकनीक के अनुसंधान कार्य और व्यवसायीकरण को बढ़ावा मिलेगा। इस परियोजना का संचालन डॉ. एस. के. सहरावत के नेतृत्व में अनुसंधान निदेशालय द्वारा किया जा रहा है। इसके अंतर्गत किया जा रहा शोध कार्य ना केवल हरियाणा बल्कि देश के सभी किसानों के लिए उपयोगी होगा जो सब्जी उत्पादन से जीविका कमा रहे हैं। प्रो. के.पी. सिंह ने बताया कि हरियाणा में एक बार पहचाने जाने वाले प्रतिरोधी रूटस्टॉक्स न केवल कृषि-रसायनों पर निर्भरता को कम करेंगे बल्कि इस तकनीक के साथ हमारे किसानों की प्रमुख



समस्याओं के समाधान की पेशकश करेंगे जिन्हे वर्तमान परिदृश्य में स्थायी सब्जी उत्पादन के लिए रसायनों के सीमित उपयोग के साथ पर्यावरण के अनुकूल माना जाता है। उन्होंने बताया कि हरियाणा और आस-पास के क्षेत्रों में रूटस्टॉक्स की पहचान के डेश्यों के साथ अनुसंधान कार्य शुरू किया गया है जो हमारे क्षेत्र की प्रचलित समस्याओं जैसे कि संरक्षित खेती में निमेटोड की समस्या, कुछ क्षेत्रों में लवणता या क्षारवता की समस्या, कुकुर्बिंटस और सॉलानसियस सब्जियों में फ्यूसरियम या

बैकटीरियल विल्ट की समस्या इत्यादि। इसके साथ-साथ पौधे की शक्ति और उपज में वृद्धि के लिए भी प्रयास किये जा रहे हैं। ग्राफिटिंग एक अनुत्ती बागवानी तकनीक है जिसका उपयोग दुनियाभर में मिट्टी से पैदा होने वाली बीमारियों और कीटों को दूर करने के लिए या विभिन्न पर्यावरणीय तनाव परिस्थितियों में पौधे की शक्ति बढ़ाने के लिए किया जाता है। आज सब्जियों में ग्राफिटिंग अधिक महत्वपूर्ण हो गई है क्योंकि फसल चक्र या मिट्टी के धूमन के विकल्प सीमित हैं। ग्राफिटिंग का उपयोग पर्यावरणीय तनाव जैसे लवणता, सूखा, बाढ़ और तापमान को कम करने के लिए भी किया जाता है। तरबूज फसल के संदर्भ में जापान, कोरिया, दक्षिणी स्पैन, दक्षिणी इटली, तुर्की और ग्रीस में उत्पादित लगभग सभी तरबूजों को ग्राफ्ट किया जाता है और दुनियाभर में ग्राफिटिंग टमाटर, बैंगन, मिर्च, ककड़ी और खरबूजे की



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
ऑनलाइन (यूनिक हरियाणा)	16.06.2020	---	---

**चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सब्जी विज्ञान विभाग द्वारा निमेटोड, कीटों, मुदाजनित बीमारियों को कम करने के लिए विकसित की गयी प्रैटिंग तकनीक**

June 16, 2020 • Rakesh • Haryana News

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषिविज्ञान भौ. के. पी. सिंह के मार्गदर्शन में सब्जी विज्ञान विभाग में 2018 में 175 वार्ष की उम्र की पहली सांस्कृतिक कृषि विकास योजना-ए-प्रशासन परियोजना को मंजुरी दी गई है, जिससे न केवल हरियाणा बल्कि देश में भी निकट अविवाच्य में बायिंग टकनीक के अनुसंधान कार्य और व्यवसायीकरण को बढ़ावा दिया जाएगा। इस परियोजना का संचालन ऑ. पर. के सहरादार के नेतृत्व में अनुसंधान विभाग द्वारा किया जा रहा है। इसके अन्तर्गत किया जा रहा थोथर कार्य ना केवल हरियाणा बल्कि देश के सभी विभाग आईजी के लिए उपयोगी होगा जो सब्जी उत्पादन से जीविका करना होगा।

के. पी. सिंह ने बताया कि हरियाणा में एक बार पहचाने जाने वाले परिवर्ती स्टडी-र्सेज़स ने केवल कृषि-रसायनों पर निपटता को कम करने विकास इस तकनीक के साथ हासा विकासों की प्रमुख समस्याओं के समाधान की पेशकाह करेंगे जिन्हें उत्पादन परिवर्त्य में साधी सब्जी उत्पादन के लिए रसायनों के लीकित उपयोग के साथ वर्धान के अनुकूल माना जाता है। उन्होंने बताया कि हरियाणा और आस-पास के होर्डों में स्टडी-र्सेज़स की पहचान के उद्देश्यों में निमेटोड की समस्या, कृषि होर्डों में बवणता या लालवता की समस्या, कूप्कुण्डल और सैन्यनाशियस संबंधित में पृष्ठूरीरेखा या बैंडरीरेखा विकट की समस्या इत्यादि। इसके साथ-साथ अधीक्षी और उपर्युक्त अन्य आवासीय तकनीक है जिसका उत्पादन दुनियावर में निर्मी से पेटा होने वाली बीमारियों और कीटों के द्वारा कार्य करने के लिए यह विकिनिक पर्यावरणीय तनाव परिवर्तियों में पीछी की शक्ति बढ़ाने के लिए किया जाता है। आज यह संक्षियों में बायिंग महावर्षी हो गई है जबकि फसल चक्र या निर्मी के पूर्ण के विकास संभित है।

विकास का उत्पादन पर्यावरणीय तनाव जैसे बवणता, सूखा, बाढ़ और लालवता को कम करने के लिए भी किया जाता है। तादृज फसल के संरक्षण में जापान, कोरिया, दक्षिण सीन, दक्षिणी इटली, तुर्की और चीस में उत्पादन सभी तादृजों को बाषपत्र किया जाता है और दुनियावर में बायिंग उत्पादन, बैंगन, निर्मी, ककड़ी और सब्जेक्स की संख्या बढ़ रही है। हालांकि, वर्षापाति का विकिनिक वर्षीय लालवता है, लेकिन 1900 के शुक्रावारी दिनों तक इस परिवर्तियों नहीं किया गया था जब यूकेनिटाकेनका नामक वैज्ञानिक ने जापान में एक कृषि-उत्पादन के लिए एक कॉर्निकारी लालवता हो गई है जो दर्शात है कि वर्षापाति का विकिनिक वर्षीय की सब्जी उत्पादन के लिए एक कॉर्निकारी लालवता हो सकती है और वैज्ञानिकों को इस लालवता को और विकसित करने के लिए धूम्राकृति कर सकती है जिससे यह थोथर सब्जी के बीच वर्षापाति हो जाए।

टेक्निकी ने बताया है कि जापान के द्वारा जाने उत्पादित नाम का एक छोटा लालवत उत्पादन ने कांप (या स्कॉफ) पर लालवत को साफ करने के लिए बायिंग उत्पादन की प्रौद्योगिक विकट को प्रदान किया। 1950 के दौरान तक, एक ही अधिक के बाजार उत्पादन के कारण यूट्रिनिटिव रोटों और सुरोटों के महाउत्पादन के कारण यूट्रिनिटिव का उत्पादन तेज़ हो गया। इस पूर्ण के दैरान, बीज कॉर्निक्सों ने रोम वर्षापाति के लिए कृषि-स्टडी-र्स प्रज्ञान में जबरदस्त नाम कराया, और उन्होंने अपने अंतर्राष्ट्रीय विद्यालय प्रयोगों के माध्यम से कई देशों के लिए विकिनिक की शुक्रावारी प्रयोगी रोटों की इंजीनियरिंग के काम में विकसित हुआ। जो सब्जियों में बायिंग के शुक्रावारी प्रयोगी रोटों में एक महावर्षी प्रदान कर गया। 1960 के दौरान में जापान और नोर्वेर्ग में टमस्टर बायिंग का व्यवसायिक उत्पादन थोक किया गया था।

1950 के दौरान से कई परिवर्तियों देशों में बनवायति विकिनिक सफल होती है, और दुनिया भर में लेजी से लोकप्रिय हो रही है। नए स्टडी-र्सेज़स को कई नाहराष्ट्रीय प्रज्ञान के अपनी व्यवसायिक विकिनिकों के माध्यम से विकसित और अतीविक तात्पर्य के प्रति सहिष्णुता / प्रतिरोध के साथ प्रत्येक विकिनिक लालवत और घरेलू एवं घरेलू इस तात्पर्य के सफल चल हो अनुप्रयोग के लिए एक नुनियादी आवश्यकता है। भायिंग-कॉर्निक्स की विकास और शुक्रावार के बीच ऐसी विकास की कमी आपनी कृषि-सप्तरोपण को उत्पादन में सकलता की कुंजी के काम में मानवता दी गई है, जो बायिंग को विकासों द्वारा बड़े पैमाने पर अपनाने योग्य और संवितर्य बनाया।

सब्जियों में बायिंग के कार्यादे निम्नविवित कार्यादे हो सकते हैं जैसे कि रोगप्रतिरोध / सहनशीलता, नेमाटोड प्रतिरोध / सहनशीलता, उत्पादन में वृक्ष, कम लालवत के उच्च लालवत के प्रति सहिष्णुता, उच्च नम्रता, सहिष्णुता, नाम सहिष्णुता, उत्पादन पोषक तत्व का बढ़ाव, विकास को बढ़ाव देना, बारी धूता और जीविक प्रदूषक सहिष्णुता, बुरावटता में बढ़ाव, प्रदूषकीय और विकास के लिए सजावटी मुख्य, विस्तारित फसल अवधि इत्यादि शामिल हैं। इस संदर्भ में सब्जी विकासों के अनुसंधान का कार्य ऑ. इन्स्टीट्यूट, परियोजना अधिकारी द्वारा किया जा रहा है। इस तात्परीक के प्रबलन के साथ ही विकासों की आय को भी बढ़ावा जा सकता है और सब्जी उत्पादकों को इससे विशेषतः काफी लाभ होगा और इस दिशा में सब्जी विज्ञान विकास में शोध कार्य निरंतर जारी रहेगा।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
ऑनलाइन ( यूनिक हरियाणा )	16.06.2020	---	---

### चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में भाषा कौशल पर तीन सप्ताह के ऑनलाइन रिफ़ेशर कोर्स का हुआ सफलतापूर्वक सम्पन्न

June 16, 2020 • Rakesh • Haryana News

यूनिक हरियाणा हिसार: 16 जून

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के भाषा और हरियाणवी संस्कृति विभाग के सहयोग से मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय ने 27 मई से 16 जून 2020 तक भाषा कौशल पर एक ऑनलाइन रिफ़ेशर पाठ्यक्रम का आयोजन किया। भाषा कौशल पर तीन सप्ताह के ऑनलाइन रिफ़ेशर कोर्स के वैलेडिक्ट्री फ़ंक्शन पर बोलते हुए कुलपति प्रो. के.पी. सिंह ने ऑनलाइन माध्यम से ऐसे प्रासंगिक पाठ्यक्रमों के संचालन में मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय के प्रयासों की सराहना की। कोरोना महामारी के चलते ऑनलाइन माध्यम से ऐसे पाठ्यक्रमों को आयोजित करना समय की आवश्यकता है और आगे भी इस प्रकार के पाठ्यक्रमों के संचालन के लिए निदेशालय को प्रोत्साहित किया। कुलपति महोदय ने बताया कि वैज्ञानिक उन्नति व उत्थान के लिए अंगूजी भाषा का महत्व दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है।

डॉ. एम.एस. सिद्धपुरिया, निदेशक, मानव संसाधन प्रबंधन ने भाषा कौशल के बारे में वैज्ञानिकों के ज्ञान को बढ़ाने की आवश्यकता पर भी जोर दिया। उन्होंने कहा कि कृषि और संबंधित क्षेत्रों में भाषा कौशल का बहुत महत्व है और इसकी प्रासंगिकता देखने को बनती है। उन्होंने यह भी जानकारी दी कि पहली बार मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय ने ऑनलाइन माध्यम से इतनी लंबी अवधि का कोर्स किया है। पाठ्यक्रम की निदेशक डॉ. अपर्णा ने पाठ्यक्रम के बारे में रिपोर्ट प्रस्तुत की और उन्होंने बताया कि विभिन्न संचार माध्यमों के प्रवाह से जानकारी व सूचनाओं का आदान-प्रदान बढ़ता है जिसकी आज के युग में नितांत आवश्यकता है। संयुक्त निदेशक और पाठ्यक्रम समन्वयक श्रीमती मंजू महता ने बताया कि इस पाठ्यक्रम में सभी प्रतिभागियों ने बहुत उत्साह व उमंग के साथ अपनी प्रतिभागिता निभाई। विभिन्न संकायों के कुल 44 वैज्ञानिकों और शिक्षकों ने पाठ्यक्रम के लिए अपना पंजीकरण कराया जिनमें से पांच प्रतिभागी राजस्थान और गुजरात राज्यों से हैं जबकि सात प्रतिभागी विश्वविद्यालय के विभिन्न कृषि विज्ञान केन्द्रों से हैं। पाठ्यक्रम के दौरान प्रतिभागियों को भाषा में कुशलता, उच्चारण में सुधार और अंगूजी भाषा में अभिव्यक्ति विषयों पर विस्तार से जानकारी दी। डॉ. पूनम मोर, पाठ्यक्रम समन्वयक ने धन्यवाद प्रस्ताव रखा।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

### लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
ऑनलाइन (जीवन आधार)	16.06.2020	---	---

**सबंधी विज्ञान विभाग द्वारा निमेटोड, कीट, मूदाजनित बीमारियों को कम करने के लिए विकसित की ग्रापिटिंग तकनीक**



हिसार,

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सबंधी विज्ञान विभाग में 175 लाख की राशि की एक राष्ट्रीय कृषि विकास योजना-प्रतियोजना को मंजूरी दी गई है। जिससे न केवल हरियाणा के बालों में झींकट अस्थिका में ग्रापिटिंग व्यवस्था के अनुसंधान कर्त्ता और व्यवसायीयण पर्याप्त बढ़ा शोध कर्त्ता ना केवल हरियाणा का संभासन ही, एकमें सहायता के नेटवर्क में अनुसंधान निवेशोलंग दराया किया जा सकता है। इसके अंतर्गत किया जा रहा शोध कर्त्ता ने केवल हरियाणा का लिए उत्त्योगी हुआ जो जीविक कर्म रहे हैं।

कूलपर्याप्त प्रौद्योगिकी ने व्यवसाय के क्षेत्रों को बढ़ावा दिया था। विभाग ने इस प्रौद्योगिकी के संभासन पर्याप्त व्यवसायी समर्थन करने वाले एकमें विभिन्न कार्यालयों के लोगों में सहायता की घोषणा की गयी। सभी व्यवसायों के संभासन की प्रशिक्षण कर्त्ता ने विभिन्न व्यवसायों पर नियंत्रित करने के लिए उत्त्योगी उत्पादन के लिए उत्त्योग के साथ अनुसंधान के लिए उत्त्योग माना जाता है। उन्हें व्यापार विभाग, हरियाणा और अस्थिरपाल के लोगों में निमेटोड की समर्थन, कुछ लोगों में लाभवाही की विभाग, और अस्थिरपाल के लोगों में सहायता की घोषणा की गयी। इनके उत्त्योग के साथ सहायता या व्यवसायी समिति की घोषणा की गयी।

व्यापार के लिए उत्त्योग के लिए उत्त्योग को उत्पादन में लिया गया है जो हमें लोगों के विभिन्न व्यवसायों में विभिन्न व्यवसायों के लिए उत्त्योग को उत्पादन के लिए लाभवाही की विभाग, व्यापारिक और लोगों में जीविक कर्म रहे हैं। जिससे न केवल व्यापार के लिए उत्त्योग की घोषणा की गयी है।

व्यापारिक व्यवसायों के लिए उत्त्योग को उत्पादन में लिया गया है जो दुनियास्त में व्यापारिक और दुनियास्त के लिए उत्त्योग की घोषणा की गयी है। योगियों ने उत्पादन के लिए उत्त्योग की घोषणा की गयी है जो दुनियास्त में व्यापारिक और दुनियास्त के लिए उत्त्योग की घोषणा की गयी है। योगियों ने उत्पादन के लिए उत्त्योग की घोषणा की गयी है जो दुनियास्त में व्यापारिक और दुनियास्त के लिए उत्त्योग की घोषणा की गयी है।

व्यापारिक व्यवसायों के लिए उत्त्योग को उत्पादन में लिया गया है जो दुनियास्त के लिए उत्त्योग की घोषणा की गयी है। योगियों ने उत्पादन के लिए उत्त्योग की घोषणा की गयी है जो दुनियास्त में व्यापारिक और दुनियास्त के लिए उत्त्योग की घोषणा की गयी है।

व्यापारिक व्यवसायों के लिए उत्त्योग को उत्पादन में लिया गया है जो दुनियास्त में व्यापारिक और दुनियास्त के लिए उत्त्योग की घोषणा की गयी है। योगियों ने उत्पादन के लिए उत्त्योग की घोषणा की गयी है जो दुनियास्त में व्यापारिक और दुनियास्त के लिए उत्त्योग की घोषणा की गयी है।

व्यापारिक व्यवसायों के लिए उत्त्योग को उत्पादन में लिया गया है जो दुनियास्त में व्यापारिक और दुनियास्त के लिए उत्त्योग की घोषणा की गयी है। योगियों ने उत्पादन के लिए उत्त्योग की घोषणा की गयी है जो दुनियास्त में व्यापारिक और दुनियास्त के लिए उत्त्योग की घोषणा की गयी है।

व्यापारिक व्यवसायों के लिए उत्त्योग को उत्पादन में लिया गया है जो दुनियास्त में व्यापारिक और दुनियास्त के लिए उत्त्योग की घोषणा की गयी है। योगियों ने उत्पादन के लिए उत्त्योग की घोषणा की गयी है जो दुनियास्त में व्यापारिक और दुनियास्त के लिए उत्त्योग की घोषणा की गयी है।

व्यापारिक व्यवसायों के लिए उत्त्योग को उत्पादन में लिया गया है जो दुनियास्त में व्यापारिक और दुनियास्त के लिए उत्त्योग की घोषणा की गयी है। योगियों ने उत्पादन के लिए उत्त्योग की घोषणा की गयी है जो दुनियास्त में व्यापारिक और दुनियास्त के लिए उत्त्योग की घोषणा की गयी है।